================================================================================

AVYAKT MURLI

28 / 11 / 81

================================================================================

28-11-81 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

"आप पूर्वजों से सर्व आत्माओं की आशाएं"

ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड-फादर तथा गाड-फादर बाप दादा बोले:-

“आज ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर अपनी सारी वंशावली से मिल रहे हैं। कितनी बड़ी वंशावली है, इसको आप सब जानते हो? आप सभी इस वंशावली के आदि फाउन्डेशन हो वा वंशावली के वृक्ष के मूल तना हो। आप लोगों द्वारा वंशावली कैसे वृद्धि को पाती है, यह सब राज अच्छी तरह से जानते हो ना? किसी भी आत्मा को देखते हो वा सम्पर्क में आते हो तो यह स्मृति में आता है कि सर्व आत्माओं के हम पूर्वज हैं वा सारे वृक्ष की शाखायें, उपशाखायें, सबके मूल आधार हैं अर्थात् फाउन्डेशन हैं। यह स्मृति सदा इमर्ज रूप में रहती है? इस श्रेष्ठ स्मृति से स्वत: ही समर्थ स्वरूप हो ही जायेंगे। अगर तना अर्थात् मूल फाउन्डेशन कमजोर होता है तो सारा वृक्ष कमजोर बन जाता है। तना शक्तिशाली है तो वृक्ष भी शक्तिशाली है। सारे वृक्ष के हर पत्ते का सम्बन्ध बीज के साथसाथ तना से भी होता है। बीज की शक्ति तना द्वारा ही शाखाओं, उपशाखाओं को पहुँचती है। तो आज आपकी सर्व वंशावली को आप पूर्वजों द्वारा वा मूल आधार द्वारा

कौन-सी शक्ति चाहिए? सर्व आत्मायें आप पूर्वजों का किस आशाओं से याद कर रही हैं? कौन-सी शुभ चाहना आप मास्टर दाता, वरदाताओं द्वारा चाहते हैं? सर्व आत्माओं की अर्थात् अपनी बेहद की वंशावली के शुभ संकल्प वा इच्छाओं को जानते हो?

आज सर्व आत्माओं का एक ही आवाज सुनने में आ रहा है। सबका एक ही आवाज है- दो घड़ी के लिए भी सुख और चैन से जीना चाहते हैं। बेचैन हैं। सम्पत्ति और साधन होते हुए भी सुख और चैन की नींद ऑखों में नहीं है। आजकल मैजारिटी-सच्चे सुख और शान्ति के वा सच्ची खुशी के प्यासे होने के कारण रास्ता ढूंढ़ रहे हैं। अनेक अल्पकाल के रास्ते अनुभव करते, सन्तुष्टता न मिलने के कारण अब धीरे-धीरे उन अनेक रास्तों से लौट रहे हैं, यह भी नहीं, यह भी नहीं। अब नेती-नेती के अनुभव में आ रहे हैं। अभी, ''सही रास्ता कुछ और है'',- ऐसी अनुभूति करने लगे हैं। ऐसे समय पर आप पूर्वजों का कार्य है- ऐसी आत्माओं को शमा बन रास्ता दिखाना। अमर ज्योति बन अंधकार से ठिकाने पर लाना। ऐसे संकल्प आते हैं? यह स्मृति रहती है कि हम पूर्वज आत्मायें सर्व वंशावली के आगे जो करेंगे वही सारे वंशावली तक पहुँचता है? आप पूर्वजों की वृत्ति विश्व के वातावरण को परिवर्त न करने वाली है। आप पूर्वजों की दृष्टि सर्व वंशावली को ब्रदरहुड की स्मृति दिलाने वाली है। आप पूर्वजों की बाप की स्मृति, सर्व वंशावली को स्मृति दिलायेगी कि हमारा बाप आया है। आप

पूर्वजों के श्रेष्ठ कर्म वंशावली को श्रेष्ठ चरित्र अर्थात् चरित्र निमार्कण की शुभ आशा उत्पन्न करेंगे।

सबकी नजर आप पूर्वजों को ढूंढ रही है। अब बेहद के स्मृति स्वरूप बनो। तो हद की व्यर्थ बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। उल्टे वृक्ष के हिसाब से बीज के साथ तना भी ऊपर ऊंचा है। डायरेक्टर बीज और मुख्य दो पत्ते, त्रिमूर्ति के साथ समीप के सम्बन्ध वाले तना हो। कितनी ऊंची स्टेज हो गई। इसी ऊंची स्टेज पर स्थित रहो तो हद की बातें क्या अनुभव होंगी! बचपन के अलबेलेपन की बातें अनुभव होंगी। अपने बेहद के बुजुर्गपन में आओ। तो सदा सर्व अनुभवीमूर्त्त हो जायेंगे। जो बेहद के पूर्वजपन का आक्युपेशन है, उसको सदा स्मृति में रखो। अब कितना कार्य रहा हुआ है? सदा यह स्मृति में रखो। लेकिन यह सारा कार्य सहज सम्पन्न कैसे होगा? जैसे आपकी रचना साइंस वाले विस्तार को सार में समा रहे हैं। अति सूक्ष्म और शक्तिशाली साधन बना रहे हैं। जिससे समय, सम्पत्ति और शस्त्र कम से कम खर्चा हो। पहले विनाश के कार्य में कितनी बड़ी सेना, कितने शस्त्र और कितना समय लगता था और अब विस्तार को सार में लाया है ना! ऐसे आप मास्टर रचयिता बन स्थापना के कार्य में ऐसे ही सूक्ष्म द्वारा निमित्त स्थूल साधन कार्य में लगाओ। नहीं तो स्थूल साधनों के विस्तार में सूक्ष्म शक्ति गुप्त हो जाती है। स्थूल साधन का विस्तार, जैसे वृक्ष का विस्तार बीज को छुपा देता है, वैसे सूक्ष्म शक्ति की परसेन्टेज गुप्त हो जाती है। आप पूर्वज आत्माओं की

अलौकिकता- “सूक्ष्म शक्ति" है। जो सब अनुभव करें कि पूर्वजों द्वारा कोई विशेष शक्ति उत्पन्न हो रही है। वंशावली आप आत्माओं द्वारा कोई नवीनता चाहती है। साधनों की शक्ति, वाणी की शक्ति यह तो सबके पास है। लेकिन अप्राप्त शक्ति कौन-सी है? वह है- ‘श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृत्ति की शक्ति, स्नेह और सहयोग की दृष्टि।' यह किसके पास नहीं है। तो हे पूर्वज आत्मायें! अपनी वंशावली के प्राप्ति के आशाओं के दीपक जलाए यथार्थ मंजिल तक लाओ। समझा क्या करना है? जो लोग करते हैं वह किया तो क्या किया! आप तो अल्लाह-लोग हो, न्यारे लोग हो। अभी वाणी के बाम्बस फेंकते हो लेकिन यह अभी बेबी बाम्बस हैं। अभी प्राप्ति के अनुभूति के बाम्बस चलाओ। जो सीधा जीवन परिवर्तन कर दें। दिमाग तक तीर लगाये हैं, दिल का तीर नहीं लगाया है। आगे क्या करना है, वह प्लैन तो देना पड़ेगा ना! अभी मुख का आवाज निकलता है कि अच्छा कार्य कर रहे हैं। लेकिन दिल से आवाज निकले कि “यही एक मार्ग है"। मुख का सौदा करने वाले बहुत होते हैं, दिल से सौदा करने वाले कोटों में कोई होते हैं। लेकिन आप सभी दिलवाला के बच्चे हो, दिल से सौदा कराने वाले हो। तो अब क्या करेंगे? ऐसा शक्तिशाली सेवा का चक्र चलाओ जो सर्व आत्मायें अपने पूर्वजो को पहचान प्राप्ति के अधिकार को प्राप्त कर लें। कुछ सुना, अच्छा सुना, इसके बदले, कुछ मिला ऐसे अनुभूति करें। समझा? सुनाते अच्छा हैं, नहीं बनाते अच्छा हैं। कम खर्चा, कम शक्ति, कम समय इसी विधि से सिद्धि स्वरूप बनो।

पंजाब का जोन है ना? पंजाब को क्या बनायेंग ऐसी कुछ नवीनता करके दिखाओ। अनुभव कराना अर्थात् वारिस बनाना। अच्छा सुनने वाले, अच्छा-अच्छा कहने वाले, वह हो गई प्रजा। अब चाहिए वारिस क्वालिटी। एक वारिस वारिस के पीछे प्रजा तो आपेही आ जायेगी। पंजाब क्या करेगा? क्वान्टिटी नहीं बढ़ती तो क्वालिटी तो निकाल सकते हो। क्या करेंगे? अभी वारिस क्वालिटी चारों ओर कम है। तो पंजाब इसमें नम्बरवन हो जाओ। कोई क्वान्टिटी में नम्बरवन तो कोई क्वालिटी में नम्बरवन हो जाओ। समझा - पंजाब वाले क्या करेंगे? क्वालिटी वाला एक, और क्वान्टिटी कितनी होगी? क्योंकि एक क्वालिटी वाला क्वान्टिटी को स्वत: ही ले आता है। उनके नाम से आपका काम हो जायेगा। यह तो सहज है ना? अच्छा।

आज पंजाब और मधुबन का टर्न है। पंजाब वाले सबको मधुबन में आकर सरेन्डर करायेंगे। पंजाब से नदिया निकलेंगी और समा- येंगी कहाँ? मधुबन है ही सागर का कण्ठा। तो पंजाब और मधुबन का मेल हो गया। विशेष टर्न पंजाब का है इसीलिए पंजाब को कह रहे हैं। बाकी तो सब आ गये ना उसमें। मधुबन में तो सब आ गये। सबको किसमें समाना है? मधुबन में ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व पूर्वज आत्माओं को, सदा सर्व की आशायें सदाकाल के लिए पूर्ण करने वाले, अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति के अंचली की अनुभूति कराने वाले, सर्व को अनेक रास्तों से निकाल एक रास्ते पर लाने वाले, ऐसे

सर्व आत्माओं के मूल आधार, सदा सर्व को एक बाप के अधिकारी बनाने वाले ऐसी श्रेष्ठ पूर्वज आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।"

सुना तो बहुत है अब विशेषता है स्वरूप बनाना। जितना स्वयं सर्व प्राप्ति स्वरूप होंगे उतना सर्व को प्राप्ति स्वरूप बना सकेंगे। आजकल सर्व आत्मायें पाना चाहती हैं, न कि सुनना। जब पा लेते हैं तब ही खुशी से यह गीत गायेंगे कि पाना था वो पा लिया। जैसे आप लोग यह खुशी का गीत गाते हो ना! पा लिया। ऐसे अन्य आत्मायें भी यह खुशी का गीत गायेंगी। वर्तमान समय आत्माओं को यही आवश्यकता है। जो आवश्यकता है उसी को पूर्ण कनना यही आप श्रेष्ठ आत्माओं का कर्त्तव्य है। इसी कर्त्तव्य में सदा अनुभवी मूर्त्त अनुभव कराते चलो। यही चाहते हैं ना! इसी चाहना को पूर्ण करने वाले अर्थात् सर्व को तृप्त आत्मा बनाने वाले। तो सदा तृप्त आत्मा हो? सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न होगा वही तृप्त होगा। और जो स्वयं के पास होगा वही औरों को भी जरूर देगा। तो सदा प्राप्ति स्वरूप के नशे और खुशी में रहो- यही संगमयुग के जीवन की विशेषता है।बाप को पाया अर्थात् संगम युग का प्रत्यक्षफल पाया। प्रत्यक्षफल है- सर्व प्राप्ति। इसी स्थिति से सर्व सिद्धि हो जायेंगी।

मधुबन निवासी भाई-बहिनों के साथ:-

मधुबन निवासी इतने खुशनसीब हो जो सब देखकर खुश हो रहे हैं। इतनी अपनी तकदीर को जानते हो ना! कितने तकदीरवान हो जो सदा सागर के

कण्ठे पर रहते हो। सदा स्थूल में भी बाप और श्रेष्ठ आत्माओं का साथ है तो कितना बड़ा भाग्य हो गया! तो सदा अपने भाग्य के गुण गाते रहते हो? बस यही गुण गाते और खुशी के झूले में झूलते रहो। मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधु के समान मीठे। तो सदा मुख मीठा रहना और सदा सर्व का मुख मीठा करने वाले। सागर के कण्ठे पर रहने वाले होलीहंस हो। हंस क्या करते हैं? सदा मोती चुगते हैं। कंकड़ को देखते नहीं, रत्नों को देखते हैं। तो सभी रत्नों को ग्रहण करने वाले हो ना! महान तीर्थ- स्थान पर रहने वाली महान आत्मायें हो। तो यह महात्माओं का ग्रुप हो गया ना! महात्मा अर्थात् जो सदा महान वस्तु को देखे। तो महान वस्तु कौन-सी है? (आत्मा) तो महात्मा की नजर कहाँ जायेंगी? महान वस्तु पर। तो सदा महान देखने वाले, महान बोल बोलने वाले और महान कर्म करने वाले, इसको कहा जाता है महात्मा। तो पाण्डव सभी महात्मा हो! बापदादा की सबसे ज्यादा आशायें किसमें हैं? मधुबन निवासियों में। मधुबन वालों को आशाओं के दीपक जगाने आते हैं ना? तो सदा मधुबन में दीवाली हैं ना! सदा शुभ आशाओं के दीप जग रहे हैं तो रोज दीपावली हो गई। तो मधुबन में कभी अंधकार हो नहीं सकता! मधुबन वाले मास्टर शिक्षक हो। आप सिखाओ, न सिखाओ लेकिन आपका हर कर्म हरेक आत्मा को शिक्षा देता रहता है। चाहे साधारण भी करेंगे तो भी सीखकर जाते हैं और श्रेष्ठ करते हो तो भी सीखकर जाते हैं। शिक्षा देते नहीं हो लेकिन मधुबन निवासी बनना अर्थात् मास्टर शिक्षक बनना। तो सदा याद रखो कि मैं

मास्टर शिक्षक हूँ। तो हर कर्म, हर बोल शिक्षा देने वाला हो। आप लोगों को खास तख्त पर बैठकर सिखाने की जरूरत नहीं। चलते - फिरते शिक्षक हो। जैसे आजकल चलती - फिरती लाइब्रेरी होती है ना! तो आप चलते - फिरते मास्टर शिक्षक हो। आपका स्कूल अच्छा है ना! तो सदा अपने सामने स्टूडेन्ट को देखो, अकेले नहीं हो, सदा स्टूडेन्ट के सामने हो। सदा स्टडी कर भी रहे हो और करा भी रहे हो। योग्य शिक्षक कभी भी स्टूडेन्ट के आगे अलबेले नहीं होंगे, अटेन्शन रखेंगे। आप सोते हो, उठते हो, चलते हो, खाते हो, हर समय समझो - हम बड़े कालेज में बैठे हैं, स्टूडेन्ट देख रहे हैं, तो वन्डरफुल शिक्षक हो गये ना!

आप सबकी क्या महिमा करें? मधुबन वालों की जो भी महिमा है वह सब है। ऐसे महान समझते हुए सदा चलो। बाप जितनी महिमा करेंगे उतनी फिर निभानी भी पड़ेगी। तो निभाने में भी होशियार हो ना! मधुबन का नक्शा सारे विश्व में चला जाता है। सबकी बुद्धि में सदा क्या याद रहता है? मधुबन में क्या हो रहा है। तो सर्व की बुद्धि में स्मृति स्वरूप हो। मधुबन निवासी हरेक लाइट, माइट का गोला बनो। तो लाइट और माइट के अन्दर निवासी हरेक लाइट स्वयं ही सभी आकर्षित होकर आयेंगे। अभी तो बाप का कर्त्तव्य चल रहा है, उसके कारण बाप के बनने वाले बच्चे सहज ही अनुभव कर रहे हैं और करते रहेंगे। आपका कर्त्तव्य अभी गुप्त है। आप अभी अपने शक्ति स्वरूप से वायुमण्डल बनाओ। यह तो ड्रामा अनुसार होना ही है, बढ़ना ही है, चलना ही है इसलिए चलाने वाला चला

रहा है लेकिन अभी ऐसे ही फालो फादर करो। अभी हर आत्मा शक्ति स्वरूप हो जाए। जिसके भी सम्पर्क में आते हो वह अलौकिकता का अनुभव करे। अभी वह पार्ट चलना है। सुनाया ना अभी अच्छा-अच्छा कहते हैं, लेकिन अच्छा बनना है यह प्रेरणा नहीं मिल रही है। उसका एक ही साधन है- संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप बनो। एक-एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लग जाएं। अभी सिर्फ बाप शमा की आर्कषण है और सर्व शमा की आकर्षण हो जाए तो क्या होगा? शमा तो हो लेकिन अभी स्टेज पर नहीं आये हो। स्टेज पर आओ तो देखो आबू वाले कैसे आपके पीछे - पीछे दौड़ते हैं। आप लोगों को जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी वह स्वयं आकर कहेंगे- जी हजूर, कोई सेवा!

अभी लाडले बच्चे बने हो, इसमें तो ठीक, बच्चे और बाप के साथ लाडकोड में, सम्बन्ध निभाने में ठीक हो लेकिन अब मास्टर शिक्षक बनकर, मास्टर सतगुरू बनकर स्टेज पर आओ। अभी यह दो पार्ट रहे हुए हैं। समझा - अच्छा। मधुबन निवासियों को बापदादा सदा विशेष आत्मा के रूप में देखते हैं। सदा बाप की आशाओं के दीपक मधुबन निवासी है। सभी सन्तुष्ट तो सदा हो ना? सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना यही आप सबका सदा का सलोगन हो। सदा आपके बोर्ड पर कौन-सा सलोगन लिखा है? सन्तुष्ट रहना भी है और करना भी है। इसी सर्टिफिकेट वाले भविष्य

में भी राज्य भाग्य का सर्टिफिकेट ले लेंगे। तो मधुबन वालों ने यह सर्टीफिकेट तो लिया है ना सदा! अमृतवेले इस सलोगन को स्मृति में लाओ। जैसे बोर्ड पर सलोगन लिखते हो वैसे सदा अपने मस्तक के बोर्ड पर यह सलोगन दौड़ाओ। तो सभी सन्तुष्ट मूर्तियाँ हो जायेंगे। अच्छा।

सेवाधारियों के साथ- सेवाधारी, किस स्थान के सेवाधारी हो? यह तो अच्छी तरह से जानते हो ना कि महायज्ञ के सेवाधारी हैं। जो महायज्ञ के सेवाधारी हैं उन्हों को यज्ञ से प्रसाद मिलता है। यज्ञ के प्रसाद का बहुत महत्व होता है ना! वैसे भी लौकिक में भी प्रसाद मिलने वाले को महान आत्मा, भाग्यवान आत्मा कहा जाता है। सबको प्रसाद नहीं मिलता है। भाग्यवान को मिलता है। तो यह है महायज्ञ का महाप्रसाद। महाप्रसाद क्या है? सदा कमाई जमा होना, सर्व खज़ाने प्राप्त होना यही महाप्रसाद है। क्योंकि देखो, यहाँ यज्ञ सेवा करने से जो सबसे श्रेष्ठ खज़ाना है- शक्तियों का, सुख का, शान्ति का वह सर्व खज़ानों की अनुभूति होती है ना! तो यही यज्ञ-प्रसाद है। इसी प्रसाद द्वारा सदा प्रसन्न भी रहते हो और आगे भी सदा प्रसन्न रहेंगे। तो सबसे बड़ा खज़ाना वा प्रसाद प्रसन्नता की प्राप्ति। यहाँ रहते सदा प्रसन्न रहे हो ना? किसी भी प्रकार के वातावरण में प्रसन्न रहने के अभ्यासी बन गये। वातावरण आपको अपनी तरफ न खीचें। लेकिन आप वातावरण को परिवर्तन कर लो, यह है महावीर की निशानी। तो क्या आप समझते हो महाप्रसाद मिला? महाप्रसाद लेने वाले महान भाग्यवान हो।

जितनी भी आत्माओं की सेवा की उन सर्व आत्माओं की शुभ भावना आपके प्रति आशीर्वाद का रूप बन गई। तो कितनी आत्माओं की आशीर्वाद मिली होगी? सर्वश्रेष्ठ आत्माओं की आशीर्वाद अनेक जन्मों के लिए सदा सम्पन्न बना देती है। तो सबकी आशीर्वाद ली? सदा राजयुक्त अर्थात् राजी रहे? कभी सेवा में नाराज तो नहीं हुए? सदा राजी। कोई नाराज करे तो भी नाराज न हों क्योंकि जो राज को जानते हैं कि यह वैरायटी वृक्ष है, तो इस राज को जानने वाले कभी नाराज नहीं होते। नाराज होना अर्थात् इस राज को न जानना। तो सभी राजयुक्त हो।

सेवा का चान्स मिला अर्थात् लाटरी का लकी नम्बर खुल गया। सेवाधारी अर्थात् लकी नम्बर वाले। लकी नम्बर हैं ना? लकी नम्बर बहुत थोड़ों का निकलता है और लकी नम्बर में सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति होती है। लकी नम्बर अर्थात् स्वयं लकी बन गये। अच्छा

माताओं ने जन्म-जन्म का खाता जमा किया। एक जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध बनाना, यह तो सस्ता सौदा हो गया ना! थोड़ासा समय मेहनत और जन्म-जन्म का फल। तो सभी ने सस्ता सौदा करके अपनी कमाई जमा कर ली। मातायें सदा सहयोगी रहीं, इसकी मुबारक हो। जैसे यहाँ सेवा का भाग्य बनाया वैसे इस भाग्य को सदा साथ रखना। सदा भाग्य का दीपक जगा रहे इसके लिए सदा अटेन्शन। अपना भाग्य साथ रखना अर्थात् भाग्यविधाता को साथ रखना। आपके भाग्य का सितारा चमकता हुआ देख औरों का भी भाग्य खुल जायेगा। अच्छा।

प्रश्न- कुमारियों को कौन-सी कमाल करके दिखानी चाहिए?

उत्तर- सबसे बड़े ते बड़ी कमाल है- बाप ने कहा और बच्चों ने किया। जैसे चात्रक होता है ना, बूंद आई और धारण की। तो सबसे बड़ी कमाल है बाप का हर बोल करके दिखाना। कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है कुमारियों की कमाल। इसीलिए यादगार में भी दिखाते हैं- कुमारियों ने बाप को प्रत्यक्ष किया। विजय प्राप्त की ना! तो वह कौन-सी कुमारी थी? हरेक समझें मैं। इसमें हरेक अपने को आगे रखे। पहले मैं। इसको कहा जाता है कुमारियों की कमाल। हरेक बाप को प्रत्यक्ष करने वाली निमित्त आत्मा बन जाए, सभी अमूल्यय रत्न हो जायेंगे। अच्छा!

==============================================================================

QUIZ QUESTIONS

==============================================================================

प्रश्न 1 :- बाबा ने कौन सी श्रेष्ठ स्मृति से स्वत: ही समर्थ स्वरूप हो ही जाएंगे कहा और उस विषय पर क्या चर्चा की?

प्रश्न 2 :- सच्ची सुख और शांति की प्यासी आत्माओं के प्रति पूर्वज आत्माओं के कर्तव्य के बारे में बाबा ने क्या क्या कहा?

प्रश्न 3 :- बाबा साइंस का उदाहरण देकर के अभी पूर्वज आत्माओं को सेवा के बारे मे क्या डायरेक्शन्स दिया?

प्रश्न 4 :- श्रेष्ठ आत्माओं का कर्तव्य और उनके निशानी के बारे में बाबा ने क्या बताया?

प्रश्न 5 :- मधुबनवासियों के बारे में बाबा ने क्या क्या महिमा की?

FILL IN THE BLANKS:-

(करना, दीपावली, पत्ते, बेबी, आक्युपेशन, तना, वाणी, वृक्ष, पूर्वजपन, रहना, आशाओं, स्लोगन)

1 सारे ____ के हर _____ का सम्बन्ध बीज के साथसाथ _____ से भी होता है।

2 जो बेहद के ____ का ____ है, उसको सदा स्मृति में रखो।

3 अभी ______ के बाम्बस फेंकते हो लेकिन यह अभी _____ बाम्बस हैं।

4 सदा शुभ _____ के दीप जग रहे हैं तो रोज ______ हो गई।

5 सन्तुष्ट _____ और सन्तुष्ट _____ यही आप सबका सदा का _____ हो।

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:- 【✔】 【✖】

1 :- मुख का सौदा करने वाले बहुत होते हैं, दिल से सौदा करने वाले कोटों में कोई होते हैं।

2 :- पंजाब है ही सागर का कण्ठा।

3 :- अपना भाग्य साथ रखना अर्थात् भाग्यविधाता को दूर रखना।

4 :- कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है पांडवों की कमाल।

5 :- माताओं ने जन्म-जन्म का खाता जमा किया।

==============================================================================

QUIZ ANSWERS

==============================================================================

प्रश्न 1 :- बाबा ने कौन सी श्रेष्ठ स्मृति से स्वत: ही समर्थ स्वरूप हो ही जाएंगे कहा और उस विषय पर क्या चर्चा की?

उत्तर 1 :- बाबा ने कहा कि किसी भी आत्मा को देखते हो वा सम्पर्क में आते हो तो यह स्मृति में आता है कि सर्व आत्माओं के हम पूर्वज हैं वा सारे वृक्ष की शाखायें, उपशाखायें, सबके मूल आधार हैं अर्थात् फाउन्डेशन हैं। यह स्मृति सदा इमर्ज रूप में रहती है? इस श्रेष्ठ स्मृति से स्वत: ही समर्थ स्वरूप हो ही जायेंगे।

बाबा ने इस विषय पर और कहा अगर तना अर्थात् मूल फाउन्डेशन कमजोर होता है तो सारा वृक्ष कमजोर बन जाता है। तना शक्तिशाली है

तो वृक्ष भी शक्तिशाली है। सारे वृक्ष के हर पत्ते का सम्बन्ध बीज के साथ-साथ तना से भी होता है। बीज की शक्ति तना द्वारा ही शाखाओं, उपशाखाओं को पहुँचती है।

प्रश्न 2 :- सच्ची सुख और शांति के प्यासी आत्माओं के प्रति पूर्वज आत्माओं के कर्तव्य के बारे मे बाबा ने क्या क्या कहा?

उत्तर 2 :- बाबा ने कहा सच्ची सुख और शांति के प्यासी आत्माये जब "सही रास्ता कुछ और है",- ऐसी अनुभूति करने लगे .

❶ ऐसे समय पर आप पूर्वजों का कार्य है- ऐसी आत्माओं को शमा बन रास्ता दिखाना।

❷ अमर ज्योति बन अंधकार से ठिकाने पर लाना। यह स्मृति रहती है कि हम पूर्वज आत्मायें सर्व वंशावली के आगे जो करेंगे वही सारे वंशावली तक पहुँचता है? आप पूर्वजों की वृत्ति विश्व के वातावरण को परिवर्तन करने वाली है।

❸ आप पूर्वजों की दृष्टि सर्व वंशावली को ब्रदरहुड की स्मृति दिलाने वाली है। आप पूर्वजों की बाप की स्मृति, सर्व वंशावली को स्मृति दिलायेगी कि हमारा बाप आया है। आप पूर्वजों के श्रेष्ठ कर्म वंशावली को श्रेष्ठ चरित्र अर्थात् चरित्र निर्माण की शुभ आशा उत्पन्न करेंगे। सबकी नजर

आप पूर्वजों को ढूंढ रही है। अब बेहद के स्मृति स्वरूप बनो। अपने बेहद के बुजुर्गपन में आओ।

प्रश्न 3 :- बाबा साइंस का उदाहरण देकर के अभी पूर्वज आत्माओं को सेवा के बारे मे कैसे डायरेक्शन्स दिया?

उत्तर 3 :- बाबाने कहा:-

❶ आपकी रचना साइंस वाले विस्तार को सार में समा रहे हैं। अति सूक्ष्म और शक्तिशाली साधन बना रहे हैं। जिससे समय, सम्पत्ति और शस्त्र कम से कम खर्चा हो। ऐसे आप मास्टर रचयिता बन स्थापना के कार्य में ऐसे ही सूक्ष्म द्वारा निमित्त स्थूल साधन कार्य में लगाओ। नहीं तो स्थूल साधनों के विस्तार में सूक्ष्म शक्ति गुप्त हो जाती है। स्थूल साधन का विस्तार, जैसे वृक्ष का विस्तार बीज को छुपा देता है, वैसे सूक्ष्म शक्ति की परसेन्टेज गुप्त हो जाती है।

❷ आप पूर्वज आत्माओं की अलौकिकता- "सूक्ष्म शक्ति" है। जो सब अनुभव करें कि पूर्वजों द्वारा कोई विशेष शक्ति उत्पन्न हो रही है। वंशावली आप आत्माओं द्वारा कोई नवीनता चाहती है। साधनों की शक्ति, वाणी की शक्ति यह तो सबके पास है। लेकिन अप्राप्त शक्ति कौन-सी है? वह है- 'श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृत्ति की शक्ति, स्नेह और सहयोग की दृष्टि।' यह किसके पास नहीं है।

❸ जो लोग करते हैं वह किया तो क्या किया! आप तो अल्लाह-लोग हो, न्यारे लोग हो। अभी वाणी के बाम्बस फेंकते हो लेकिन यह अभी बेबी बाम्बस हैं। अभी प्राप्ति के अनुभूति के बाम्बस चलाओ। जो सीधा जीवन परिवर्तन कर दें। अभी मुख का आवाज निकलता है लेकिन दिल से आवाज निकले कि "यही एक मार्ग है"। मुख का सौदा करने वाले बहुत होते हैं, दिल से सौदा करने वाले कोटों में कोई होते हैं। लेकिन आप सभी दिलवाला के बच्चे हो, दिल से सौदा कराने वाले हो। कम खर्चा, कम शक्ति, कम समय इसी विधि से सिद्धि स्वरूप बनो।

प्रश्न 4 :- श्रेष्ठ आत्माओं का कर्तव्य और उनके निशानी के बारे में बाबा ने क्या कहा?

उत्तर 4 :- बाबा ने कहा:-

❶ जैसे आप लोग यह खुशी का गीत गाते हो ना! पा लिया। ऐसे अन्य आत्मायें भी यह खुशी का गीत गायेंगी। वर्तमान समय आत्माओं को यही आवश्यकता है। जो आवश्यकता है उसी को पूर्ण कनना यही आप श्रेष्ठ आत्माओं का कर्त्तव्य है। इसी कर्त्तव्य में सदा अनुभवी मूर्त्त अनुभव कराते चलो।

❷ इसी चाहना को पूर्ण करने वाले अर्थात् सर्व को तृप्त आत्मा बनाने वाले। तो सदा तृप्त आत्मा हो? सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न होगा

वही तृप्त होगा। और जो स्वयं के पास होगा वही औरों को भी जरूर देगा। तो सदा प्राप्ति स्वरूप के नशे और खुशी में रहो- यही संगमयुग के जीवन की विशेषता है।बाप को पाया अर्थात् संगम युग का प्रत्यक्षफल पाया। प्रत्यक्षफल है- सर्व प्राप्ति।

**प्रश्न 5 :- मधुबन निवासियों के बारे मे बाबा क्या क्या महिमा की?**

उत्तर 5 :- बाबा ने मधुबन निवासियों की महिमा इसप्रकार की :-

❶ मधुबन निवासी इतने खुशनसीब हो जो सब देखकर खुश हो रहे हैं। इतनी अपनी तकदीर को जानते हो ना! कितने तकदीरवान हो जो सदा सागर के कण्ठे पर रहते हो। सदा स्थूल में भी बाप और श्रेष्ठ आत्माओं का साथ है तो कितना बड़ा भाग्य हो गया! तो सदा अपने भाग्य के गुण गाते रहते हो? बस यही गुण गाते और खुशी के झूले में झूलते रहो।

❷ मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधु के समान मीठे। तो सदा मुख मीठा रहना और सदा सर्व का मुख मीठा करने वाले।

❸ सागर के कण्ठे पर रहने वाले होलीहंस हो। हंस क्या करते हैं? सदा मोती चुगते हैं। कंकड़ को देखते नहीं, रत्नों को देखते हैं। तो सभी रत्नों को ग्रहण करने वाले हो ना!

❹ महान तीर्थ- स्थान पर रहने वाली महान आत्मायें हो। तो यह महात्माओं का ग्रुप हो गया ना! महात्मा अर्थात् जो सदा महान वस्तु को

देखे। तो महान वस्तु कौन-सी है? (आत्मा) तो महात्मा की नजर कहाँ जायेंगी? महान वस्तु पर। तो सदा महान देखने वाले, महान बोल बोलने वाले और महान कर्म करने वाले, इसको कहा जाता है महात्मा।

❺ मधुबन वाले मास्टर शिक्षक हो। आप सिखाओ, न सिखाओ लेकिन आपका हर कर्म हरेक आत्मा को शिक्षा देता रहता है। चाहे साधारण भी करेंगे तो भी सीखकर जाते हैं और श्रेष्ठ करते हो तो भी सीखकर जाते हैं। शिक्षा देते नहीं हो लेकिन मधुबन निवासी बनना अर्थात् मास्टर शिक्षक बनना। तो हर कर्म, हर बोल शिक्षा देने वाला हो। आप लोगों को खास तख्त पर बैठकर सिखाने की जरूरत नहीं। चलते - फिरते शिक्षक हो।

❻ एक-एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लग जाएं। अब मास्टर शिक्षक बनकर, मास्टर सतगुरू बनकर स्टेज पर आओ।

FILL IN THE BLANKS:-

(करना, दीपावली, पत्ते, बेबी, आक्युपेशन, तना, वाणी, वृक्ष, पूर्वजपन, रहना, आशाओं, स्लोगन)

1 सारे ____ के हर ____ का सम्बन्ध बीज के साथसाथ _____ से भी होता है।

वृक्ष / पत्ते / तना

2 जो बेहद के ____ का ____ है, उसको सदा स्मृति में रखो।

पूर्वजपन / आक्युपेशन

3 अभी _____ के बाम्बस फेंकते हो लेकिन यह अभी _____ बाम्बस हैं।

वाणी / बेबी

4 सदा शुभ _____ के दीप जग रहे हैं तो रोज ______ हो गई।

आशाओं / दीपावली

5 सन्तुष्ट _____ और सन्तुष्ट _____ यही आप सबका सदा का _____ हो।

रहना / करना / सलोगन

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:- 【✔】 【✖】

1 :- मुख का सौदा करने वाले बहुत होते हैं, दिल से सौदा करने वाले कोटों में कोई होते हैं। 【✔】

2 :- पंजाब है ही सागर का कण्ठा। 【✖】

मधुबन है ही सागर का कण्ठा।

3 :- अपना भाग्य साथ रखना अर्थात् भाग्यविधाता को दूर रखना। 【✖】

अपना भाग्य साथ रखना अर्थात् भाग्यविधाता को साथ रखना।

4 :- कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है पांडवों की कमाल। 【✖】

कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है कुमारियों की कमाल।

5 :- माताओं ने जन्म-जन्म का खाता जमा किया। 【✔】